हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली

स्नातक-हिन्दी(अंतिम सत्र) के विद्यार्थियों हेतु

अंजनी कुमार श्रीवास्तव
सह आचार्य, हिन्दी विभाग
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
बिहार (मोतिहारी)

पारिभाषिक शब्दावली का तात्पर्य

- पारिभाषिक शब्दावली अंग्रेजी के Technical Terminology का हिन्दी अनुवाद है| अंग्रेजी का यह Technical शब्द ग्रीक भाषा के Technikoi से व्युत्पन्न है जिसका अर्थ है कला विषयक| कोश के अनुसार टेक्निकल का अर्थ है विशिष्ट कला विज्ञान तथा शिल्प विषयक|

- पारिभाषिक शब्द का तात्पर्य है ज्ञान–विज्ञान के विशेष क्षेत्र में विशिष्ट तथा निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होने वाला शब्द |

- प्रयोजनमूलक हिन्दी की दृष्टि से शब्द तीन प्रकार के होते हैं – सामान्य, अर्ध पारिभाषिक तथा पारिभाषिक | हमारे दैनिक जीवन या सामान्य व्यवहार में प्रयुक्त होने वाले शब्द सामान्य शब्द हैं| जैसे –लकड़ी, घोड़ा और गाड़ी आदि| कुछ ऐसे शब्द होते हैं जो सामान्य और पारिभाषिक दोनों रूपों में प्रयुक्त होते हैं वे अर्ध पारिभाषिक शब्द हैं| जैसे-रस, अर्थ आदि| पारिभाषिक शब्द वैसे शब्द हैं जिनका किसी विशेष विषय अथवा क्षेत्र के लिए अर्थ निश्चित कर दिया गया है| जैसे- मानविकी, प्रशासन आदि|

परिभाषा

- चैम्बर्स टेक्निकल डिक्शनरी – पारिभाषिक शब्दावली विशेषज्ञों तथा तकनीशियनों के उनके अपने विशिष्ट विचारों को लिपिबद्ध करने हेतु ग्रहण, अनुकूलन और निर्माण द्वारा तैयार किये जाने वाले प्रतीक मात्र हैं|

- रैंडम हाउस- विज्ञान अथवा कला जैसे विशिष्ट विषयों की तकनीकी अभिव्यक्ति हेतु किसी निश्चित अथवा विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त शब्द |

- डॉ. रघुवीर – पारिभाषिक शब्द किसको कहते हैं, जिसकी परिभाषा की गयी हो| पारिभाषिक शब्द का अर्थ है जिसकी सीमाएँ बाँध दी गयी हों| जिन शब्दों की सीमा बाँध दी जाती है वे पारिभाषिक शब्द हो जाते हैं और जिनकी सीमा नहीं बाँधी जाती वे साधारण शब्द होते हैं |

- भोलानाथ तिवारी- पारिभाषिक शब्द ऐसे शब्दों को कहते हैं जो रसायन, भौतिकी, दर्शन, राजनीति आदि विभिन्न विज्ञानों या शास्त्रों के शब्द होते हैं तथा जो अपने-अपने क्षेत्र में विशिष्ट अर्थ में सुनिश्चित रूप से परिभाषित होते हैं| अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से निश्चित रूप से परिभाषित होने के कारण ही ये शब्द पारिभाषिक शब्द कहे जाते हैं|

विशेषताएँ

- परिभाषित और व्याख्या सापेक्ष- पारिभाषिक शब्दों को व्याख्या सापेक्ष और परिभाषित होना चाहिए| यही विशेषता उसे सामान्य भाषा से अलग करती है| उदाहरणार्थ- रस कहने से साहित्य में सामान्य फल आदि के रस का बोध नहीं होता, बल्कि रस जो आनन्द का वाचक शब्द है उसका बोध होता है|

- विशिष्ट अवधारणा अथवा संकल्पना से सम्बद्धता –पारिभाषिक शब्द एक विशिष्ट संकल्पना को भी धारण करते हैं| उदाहरण के लिए अर्थशास्त्र का 'अर्थ' शब्द एक विशिष्ट संकल्पना को धारण करता है|

- नियतार्थता व अपवर्जिता- पारिभाषिक शब्द के अर्थ निश्चित होने से उसके शेष अर्थ अपवर्जित हो जाते हैं| गति कहने से भौतिकी विज्ञान में गति के सामान्य अर्थ चाल का अपवर्जन हो जाता है तथा उसका एक नियत अर्थ प्राप्त होता है|

- एकार्थ बोधकता—पारिभाषिक शब्द एकार्थक होते हैं| उनसे कोई दूसरा अर्थ प्राप्त नहीं होता| जिस अर्थ के लिए निश्चित किया गया है वही अर्थ प्राप्त होगा| जैसे भौतिक विज्ञान में कहीं भी चाल का मतलब एक ही होगा| यह वेग से अलग ही होगी |

- असामान्यता- असामान्यता का मतलब है सामान्य शब्दों से विलक्षण| जब कोई शब्द पारिभाषिक बन जाता है तब वह बोलचाल के शब्दों से भिन्न हो जाता है| विस्थापन के जन सामान्य में निहित अर्थ से भौतिक विज्ञान का विस्थापन अलग अर्थ देने लगता है जिसका मतलब होता है दिशा सहित दूरी|

- अपर्यायीता- पारिभाषिक शब्दों का कोई पर्यायवाची नहीं होता| वह एक ही होता है जो एक अर्थ में प्रयुक्त होता है| भौतिक विज्ञान के चाल शब्द अथवा साहित्यशास्त्र के रस शब्द का कोई पर्यायवाची नहीं है|

- जननशक्ति अथवा उर्वरता- पारिभाषिक शब्दों में उर्वरता या जननशक्ति का होना आवश्यक है| इससे एक ही शब्द से अनेक शब्दों का निर्माण सम्भव होता है| जैसे- एक अंतर शब्द से रूपांतरण, लिप्यान्तरण, अंतरण आदि अनेक शब्द निर्मित हो सकते हैं|

- विभिन्न क्षेत्रों/ विषयों के अनुसार अर्थ की भिन्नता- एक ही शब्द अलग- अलग विषयों के लिए पारिभाषिक शब्द के रूप में अलग-अलग अर्थ देता है| कल्चर का जो अर्थ समाजविज्ञान में है वही कृषि विज्ञान में नहीं है|

- कृत्रिम रूप से निर्माण- पारिभाषिक शब्दावली स्वाभाविक प्रक्रिया के स्थान पर कृत्रिम रूप से निर्मित होती है|

महत्त्व

- विशिष्ट अभिव्यक्तियों तथा सम्प्रेषण हेतु अनिवार्य
- सूक्ष्म और बौद्धिक चिंतन के लिए आवश्यक
- वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के लिए अनिवार्य
- भाषा की समृद्धि का सूचक
- उच्च शिक्षा या अध्ययन अध्यापन के लिए आवश्यक
- विविध क्षेत्रों में ज्ञान के विकास हेतु
- नवीन शोधों एवं प्रयोगों से लाभान्वित होने हेतु
- राजभाषा अथवा कार्यालय की भाषा बनाने हेतु
- राष्ट्रीय स्वाभिमान व गरिमा हेतु

पारिभाषिक शब्दावली के निर्धारण की पद्धतियाँ

1.ग्रहण- विदेशी भाषाओं की पारिभाषिक शब्दावली का ज्यों का त्यों ग्रहण | जैसे- रेडियो, स्टेशन, कम्प्यूटर, डीन आदि| अंतरराष्ट्रीयतावादी विद्वान् इस प्रकार पारिभाषिक शब्दावली का निर्धारण करना चाहते हैं|

2.अनुकूलन- विदेशी शब्दावली को अपनी भाषा की प्रकृति के अनुरूप परिवर्तित कर अपनी भाषा में सम्मिलित करना| यह दो प्रकार का होता है क. ध्वन्यानुकूलन, जैसे – academy के लिए अकादमी| ख. शब्दानुकूलन, जैसे- डिजिटलाइजेशन के लिए डिजिटलीकरण|

3.संचयन – इसके अंतर्गत भारतीय भाषाओं/ बोलियों से शब्दों का संचय व प्रयोग आता है| जैसे-अणु, परमाणु आदि|

4.निर्माण- राष्ट्रीयतावादी विद्वान विशेषकर डॉ. रघुवीर संस्कृत के धातुओं में उपसर्ग-प्रत्यय आदि के संयोग तथा सामासिक पद्धति से पारिभाषिक शब्दों के निर्माण के पक्षधर हैं| जैसे- अधि+सूचना –अधिसूचना, लिपि+क- लिपिक आदि|

पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के सिद्धांत

डॉ. रघुवीर ने पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के 13 सिद्धांत दिए हैं| वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग ने भी कुछ सिद्धांत दिए हैं जिसका 'प्रशासनिक शब्दावली' पुस्तक में उल्लेख है| पुस्तक से साभार -

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा स्वीकृत शब्दावली-निर्माण के सिद्धांत

1. अंतर्राष्ट्रीय शब्दों को यथासंभव उनके प्रचलित अंग्रेजी रूपों में ही अपनाना चाहिए और हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं की प्रकृति के अनुसार ही उनका लिप्यंतरण करना चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली के अंतर्गत निम्नलिखित उदाहरण दिए जा सकते हैं:-
   क) तत्वों और यौगिकों के नाम, जैसे–हाइड्रोजन, कार्बन डाइऑक्साइड आदि;
   ख) तौल और माप की इकाइयां और भौतिक परिमाण की इकाइयां, जैसे–डाइन, कैलॉरी, एम्पियर आदि;
   ग) ऐसे शब्द जो व्यक्तियों के नाम पर बनाए गए हैं जैसे, मार्क्सवाद (कार्ल मार्क्स), ब्रेल (लूइस ब्रेल), बॉयकाट (कैप्टन बॉयकाट), गिलोटिन (डॉ. गिलोटिन), गेरीमैन्डर (मि. गेरी), एम्पियर (मि. एम्पियर), फारेनहाइट तापक्रम (मि. फारेनहाइट) आदि;
   घ) वनस्पतिविज्ञान, प्राणिविज्ञान, भूविज्ञान आदि की द्विपदी नामावली;
   ङ) स्थिरांक जैसे π, g, आदि;
   च) ऐसे अन्य शब्द जिनका आमतौर पर प्रायः सारी भाषाओं में व्यवहार हो रहा है, जैसे–रेडियो, पेट्रोल, रेडार, इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, न्यूट्रॉन आदि।
   छ) गणित और विज्ञान की अन्य शाखाओं के संख्यांक, प्रतीक, चिह्न और सूत्र, जैसे–साइन, कोसाइन, टैन्जेन्ट, लॉग आदि (गणितीय संक्रियाओं में प्रयुक्त अक्षर रोमन या ग्रीक वर्णमाला के होने चाहिए)।
2. प्रतीक रोमन लिपि में अंतर्राष्ट्रीय रूप में ही रखे जाएंगे, परंतु उनके संक्षिप्त रूप (विशेषकर साधारण तौल व माप संबंधी) नागरी और मानक रूपों में लिखे जा सकते हैं। सेन्टीमीटर का प्रतीक cm. हिंदी में भी रोमन में ही प्रयुक्त होगा, परन्तु इसका नागरी संक्षिप्त रूप से.मी. हो सकता है। यह सिद्धांत बच्चों के लिए लिखी किताबों और लोकप्रिय पुस्तकों में अपनाया जाएगा, परंतु विज्ञान और प्रौद्योगिकी की मानक पुस्तकों में केवल अंतर्राष्ट्रीय प्रतीक अर्थात् cm. ही प्रयुक्त करना चाहिए।
3. ज्यामितीय आकृतियों में भारतीय लिपियों के अक्षर प्रयुक्त किए जा सकते हैं, जैसे. क, ख, ग या अ, ब, स। परंतु त्रिकोणमिति में केवल रोमन अथवा ग्रीक अक्षर ही प्रयुक्त करने चाहिए, जैसे–साइन A, कॉस B आदि।
4. सामान्यतः संकल्पनात्मक शब्दों का अनुवाद किया जाना चाहिए।
5. हिंदी पर्यायों का चुनाव करते समय सरलता, अर्थ की परिशुद्धता (सटीकता) और सुबोधता का विशेष ध्यान रखना चाहिए। रूढ़िवादी तथा सुधार-विरोधी प्रवृत्तियों से से ऐसे शब्द अपनाने चाहिए जो अधिक से अधिक क्षेत्रीय भाषाओं में प्रयुक्त होते हों, और संस्कृत धातुओं पर आधारित हों।
7. जो देशी शब्द सामान्य प्रयोग के पारिभाषिक शब्दों के स्थान पर हमारी भाषाओं में प्रचलित हो गए हैं, जैसे–telegraph/telegram के लिए तार, continent के लिए महाद्वीप, post के लिए डाक, आदि, उन्हें इसी रूप में व्यवहार में लाया जाना चाहिए।
8. अंग्रेजी, पुर्तगाली, फ्रांसीसी आदि भाषाओं के ऐसे विदेशी शब्द जो भारतीय भाषाओं में प्रचलित हो गए हैं, जैसे–टिकट, सिगनल, पेन्शन, पुलिस, ब्यूरो, रेस्तरां, डीलक्स, आदि इसी रूप में अपनाए जाने चाहिए।
9. **अंतर्राष्ट्रीय शब्दों का देवनागरी लिपि में लिप्यंतरण**–अंग्रेजी शब्दों का लिप्यंतरण इतना जटिल नहीं होना चाहिए कि उसके कारण वर्तमान देवनागरी वर्णों में नए चिह्न व प्रतीक शामिल करने की आवश्यकता पड़े। शब्दों का देवनागरी लिप्यंतरण अंग्रेजी के मानक उच्चारण के अधिकाधिक अनुरूप होना चाहिए और आवश्यक होने पर ही उसमें भारत के शिक्षित वर्ग में प्रचलित उच्चारण के अनुरूप परिवर्तन किया जा सकता है।
10. **लिंग**–हिंदी में अपनाए गए अंतर्राष्ट्रीय शब्दों को पुल्लिंग रूप में ही प्रयुक्त करना चाहिए। किंतु अति आवश्यक होने या हिंदी में प्रचलन के अनुसार उन्हें भिन्न लिंग-रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है।
11. **संकर शब्द**–पारिभाषिक शब्दावली में संकर शब्द, जैसे guaranteed के लिए 'गारंटित', classical के लिए 'क्लासिकी', codifier के लिए 'कोडकार' आदि के रूप सामान्य और प्राकृतिक भाषाशास्त्रीय प्रक्रिया के अनुसार बनाए गए हैं और ऐसे शब्द रूपों को पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकताओं, यथा–सुबोधता, उपयोगिता और संक्षिप्तता का ध्यान रखते हुए व्यवहार में लाना चाहिए।
12. **पारिभाषिक शब्दों में संधि और समास**–कठिन संधियों का यथासंभव कम से कम प्रयोग करना चाहिए और संयुक्त शब्दों के लिए दो शब्दों के बीच हाइफन लगा देना चाहिए। इससे नई शब्द-रचनाओं को सरलता और शीघ्रता से समझने में सहायता मिलेगी। नवनिर्मित शब्दों में संस्कृत-आधारित 'आदिवृद्धि' से बचा जाना चाहिए। 'व्यावहारिक' 'लाक्षणिक' आदि प्रचलित संस्कृत तत्सम शब्दों में आदिवृद्धि का प्रयोग ही अपेक्षित है, परंतु नवनिर्मित शब्दों में इससे बचा जा सकता है।
13. **हलंत**–नए अपनाए हुए शब्दों में जहां आवश्यक हो वहां हल् चिह्न का प्रयोग कर उन्हें सही रूप में लिखना चाहिए।
14. **पंचम वर्ण का प्रयोग**–पंचम वर्ण के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग उचित है परंतु lens, patent आदि शब्दों का लिप्यंतरण लेंस, पेटेंट या पेटेण्ट न करके लेन्स, पेटेन्ट ही करना

पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण की प्रक्रिया

- उपर्युक्त सिद्धांतों के आधार पर पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की पाँच प्रक्रियाएँ हैं-
- क. उपसर्ग- प्रत्यय द्वारा- अनु+ बंध= अनुबंध(उपसर्ग द्वारा)
  भौतिक+ई= भौतिक (प्रत्यय द्वारा)
- ख. दो धातुओं को संयुत कर- जांच-उड़ान
- ग. सामासिक पद का निर्माण कर- स्थान+ अंतरण= स्थानान्तरण, निदेश+आलय= निदेशालय|
-
- घ. निपात द्वारा या नामधातु बनाकर – ओषीकरण
- च. यादृच्छिक – गाँधीवाद |

धन्यवाद !